काल्पनिक पार्श्व भूमि पर धार्मिक चित्र बनाये।

फ्लैंडर्स की बॅरोक कला

सोलहवीं सदी में फ्लैंडर्स की जनता ने स्पेन के विदेशी शासन से मुक्त होने के लिए विद्रोह किया किन्तु उसको सफलता नहीं मिली। विदेशी शासन व कॅथोलिक धर्म का आधिपत्य बने रहे किन्तु सत्रहवीं सदी में शान्ति व समृद्धि के फलस्वरूप सामाजिक सुस्थिरता के साथ कला का उत्थान हुआ। इस उत्थान के केन्द्र बिन्दु थे **पीटर पॉल रुबेन्स** (1577-1640) जिनकी कला व व्यक्तित्व ने करीब सब समकालीन फ्लेमिश चित्रकारों को प्रभावित किया था। उनका जीवन सुखपूर्ण रहा। वे राजनयिक भी थे व उन्होंने चित्रकला व कूटनीति दोनों क्षेत्रों में सम्मान, कीर्ति व वैभव प्राप्त किया। वे व्यवहार कुशल सुशिक्षित व धार्मिक व्यक्ति थे। वे दरबारी अधिकारी के पुत्र थे व उन्होंने आरम्भिक शिक्षा अँटवर्प में प्राप्त की। दो स्थानीय चित्रकारों से शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे आयु के 23वें साल में इटली गये जहाँ आठ साल तक मांतुआ के ड्यूक की सेवा में रहकर वेनिस, रोम आदि भिन्न स्थानों पर उन्होंने इटली की पुनरुत्थान काल व बॅरोक काल की कला का अध्ययन किया। वहाँ उन्होंने ख्याति प्राप्त कलाकारों के चित्रों की अनुकृतियाँ की एवं ग्रीक मूर्तियों से रेखाचित्र बनाये। उनसे पहले कई फ्लेमिश चित्रकार इटली हो आये थे व वहाँ की कला का अंधानुकरण करते हुए स्वतंत्र रूप से सर्जन करना भूल गये थे। किन्तु रुबेन्स महान प्रतिभा के कलाकार थे व इटली में किया अध्ययन उनकी प्रतिभा के लिए परिपोषक रहा। उनके चित्र केवल कड़ी मेहनत का फल नहीं हैं; उनमें ऐसा स्वाभाविक ऐंद्रिय आकर्षण व सजीवता है जो गुण अन्य चित्रकारों की कृतियों में नहीं देखने को मिलता। मानव-शरीर की कोमल मांसलता, साटन के वस्त्रों की चमक, लयबद्ध रेखांकन, सौम्य मनोहर रंग-संगति व सम्पूर्ण चित्र का काव्यात्मक प्रभाव उनकी कला की विशेषताएँ थीं। शास्त्रीय कला से प्रभावित होते हुए रुबेन्स की कला में शास्त्रीय कला की कठोरता नहीं है; यह यथार्थवादी व जीवन्त है। किन्तु रुबेन्स की कला में शास्त्रीय कला की कठोरता नहीं है; वह यथार्थवादी व जीवन्त है। किन्तु रुबेन्स की कला का केवल यथार्थवादी दृष्टिकोण से समुचित रसग्रहण नहीं किया जा सकता। सबसे पहले वे कवि हृदय थे व मानव, पशुपक्षी, निसर्ग आदि चराचर से अपार प्रेम करते थे। काव्यमय स्वभाव के कारण उन्होंने 'मारी द मेदिची का मार्साय पहुँचना' जैसे यथार्थवादी विषय के चित्र में जलपरियों च कामदेव की आकृतियाँ सम्मिलित की हैं व 'पृथ्वी व जलदेवता का मिलन' जैसे रूपक चित्र बनाये हैं। रुबेन्स ने भिन्न विषयों को लेकर चित्रण

Scanned with CamScanner

किया जिसमें बाइबल की कथाएँ, साधु-सन्तों के जीवन की घटनाएँ, पौराणिक व ऐतिहासिक प्रसंग, देहाती जीवन, प्रकृति दृश्य व व्यक्ति चित्र हैं। उनकी विविध प्रकार के दर्शनों से समृद्ध, निरन्तर आविष्कारशील व बहुत ही सहजोत्स्फूर्त कला निर्मिति आश्चर्यजनक है। नैसर्गिक प्रतिभा के अतिरिक्त उन्होंने चित्रण की प्रविधियों पर परिश्रम से जो प्रभुत्व प्राप्त किया है उससे वे असंख्य चित्र बना सके। 1609 में जब वे अँटवर्प लौटे तब स्पेन के वाइसराय आर्चड्यूक फर्डिनांड ने उनको दरबारी चित्रकार नियुक्त किया। अब उनका कार्यकक्ष फ्लैंडर्स का कला-केन्द्र बन गया। बहुत से कुशल व्यवसायी चित्रकार उनके सहायक बने व वहाँ एक तरह से चित्रों की अत्यधिक माँग की पूर्ति करने के हेतु चित्रों का कारखाना खुल गया। रुबेन्स चित्र का प्रारम्भिक रूपांकन करते व उसके पश्चात् उनके सहायक उस पर कार्य करते; कोई जानवरों की आकृतियों पर कार्य करता, कोई वस्तु-चित्रण करता तो कोई पृष्ठभूमि का दृश्य; अन्त में चित्र को परिष्कृत करने का कार्य रुबेन्स करते।

आरम्भ काल के प्रसिद्ध चित्र 'ईसा का क्रूसावरोहण' में रुबेन्स ने अपनी प्रतिभा द्वारा पारम्परिक विषय को रूपान्तरित किया है; फिर भी उस पर उनके इटली में किये अध्ययन का स्पष्ट प्रभाव है। अध्ययन से प्राप्त ज्ञान को आत्मसात् करके रुबेन्स ने चित्रित दृश्य को ऐसा रूप दिया है जो एक साथ करुण व प्रभावोत्पादक, नैसर्गिक व भव्य, ऐहिक व धार्मिक है। कर्णवत् दिशा में वक्र रेखाओं द्वारा ईसा व उनके शरीर व वस्त्र को नीचे उतारने वाले व्यक्तियों की आकृतियों को अंकित करने से अवरोहण में लयात्मक गति आ गयी है; तिरछी नाटकीय प्रकाशदीप्ति से ईसा की आकृति को विशिष्टता दी गयी है; ऊपरी हिस्से में चित्रित अस्पष्ट मानवाकृतियों से अवरोहण क्रिया का चित्रक्षेत्र के बाहर सम्बन्ध जुड़ जाने से समूचे दृश्य को दिव्य रूप प्राप्त हुआ है व ऐसा नहीं लगता कि यह कोई ऐहिक घटना है। प्रकाश का प्रभाव कारावाद्ज्यो के समान यथार्थवादी किन्तु भावुकतापूर्ण है तो ईसा के उभारदार मांसपेशियों का चित्रण माइकिलेंजेलो का स्मरण दिलाता है। मेरी मॅग्दालिन व उसकी सहचरी ईसा की शिष्याएँ जैसी नहीं बल्कि दरबारी स्त्रियाँ जैसी दीखती हैं व वह रुबेन्स की दरबारी कला का प्रभाव है। 'ईसा का क्रूसावरोहण' जैसे रुबेन्स के चित्र जिनमें धार्मिक, ऐहिक, यथार्थ व भव्य तत्त्वों का संयुक्त रूप है प्रतिधर्म सुधारान्दोलन की माँग के अनुरूप थे व उन्हीं की वजह से रुबेन्स को बॅरोक काल की दरबारी कला में विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ। कॅथोलिक पंथ के गिरजाघर, राजा व आश्रयदाता ऐसे चित्र चाहते थे जो जनता को भौतिक सौन्दर्य से आकृष्ट कर सकें व उस पर मनोवैज्ञानिक धार्मिक प्रभाव डाल कर उसको कॅथोलिक पंथ के प्रति निष्ठावान बनाने में सहायक हों। सम्प्रति, बहुत से समीक्षक, रुबेन्स के धार्मिक विषयों के चित्रों को नापसन्द करते हैं। 'ईसा का क्रूसावरोहण', 'मजूसियों की आराधना', 'सन्त फ्रांसिस का अंतिम परम प्रसाद' जैसे चित्रों के कलात्मक गुणों को वे मान लेते हैं किन्तु उनके विचार से इन चित्रों में अतिशयोक्ति, छिछलापन है व सच्चाई का अभाव है जो धार्मिकता के विपरीत है।

रुबेन्स को सौंपे गये अनेक चित्रण कार्यों में फ्रांस की रानी मारी व मेदिची के महल के लिए बनायी गयी चित्रमालिका महत्त्वपूर्ण थी जिसमें रूपक-चित्रण-शैली द्वारा रानी के जीवन की घटना के चित्र बनाये हैं। इससे फ्लेमिश कला का फ्रेंच कला पर काफी प्रभाव

Scanned with CamScanner